'अंधेर नगरी' नाटक का कथानक'

हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष, पत्र- 4

भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य में आधुनिक हिंदी के उन्नायक के रूप में जाना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी रचनाओं विशेषत: नाटकों और निबंधों के माध्यम से भारतीय राजनीति और समाज को एक नवीन और आधुनिक दिशा देने का कार्य किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र के सर्वाधिक चर्चित रचनाओं में उनका नाट्य प्रसन्न 'अंधेर नगरी' शामिल है जिसकी रचना सन 1881 ई. में की गई थी। इस प्रहसन के 6 दृश्यों में, विनोद पूर्णशैली अपनाते हुए कुशासन के दुष्परिणामों की ओर इशारा किया गया है। ऐसा राजा जिससे शासन में कोई व्यवस्था न हो। जहां न्याय-अन्याय में भेद नहीं किया जाता हो। अच्छे-बुरे में कोई अंतर न होता हो। निश्चय ही वह चौपट राजा है और उसकी नगरी अंधेर नगरी है। जिस राज्य में भाजी और खाजा दोनों एक ही भाव बिकते हों अर्थात बेशकीमती और कम कीमती सामान एक ही नजर से देखा जाता हो। जहां अपराधी और निरपराध दोनों में कोई अंतर नहीं हो। वह राज्य निश्चय ही त्याज्य है। ऐसे ही राज्य की कहानी इस नाटक में कही गई है जहां रहने से महंत नारायणदास जब अपने शिष्य गोवर्धनदास को मना करते हैं तब गोवर्धनदास गुरु की बात नहीं मानता है। वह

कहता है मैं तो यही रहूंगा। जहां खाने पीने की सुविधा है वह राज्य छोड़कर कहीं और क्या जाना। लेकिन ज्ञानी महंत समझ जाते हैं यह राज्य रहने के लिए सर्वथा प्रतिकूल है। क्योंकि जहां अविवेकी राजा हो वहां उसके सिपाही और कर्मचारी दुराचार, अन्याय, अत्याचार आदि को बढ़ःःाने का काम ही करते हैं। गोवर्धनदास जब मुसीबत में फंसा है तब वह अपने गुरु को याद करता है और उस समय उसके गुरु अपने विवेक से उसे बचाते हैं। और यह संदेश भी देता है कि अविवेकी राजा का अंत भी उसके अविवेक के कारण वैसा ही होता है। अंधेर नगरी एक उद्देश्य पूर्ण नाटक है जिसमें नाटकार ने अंग्रेजों के शासन का भंडाफोड़ किया है। चौपट राज्य की भांति न्याय एवं शासन व्यवस्था भारत में चल रहा था। जो राजा न्याय का रक्षक कहा जाता है वही निर्दोष को सजा दे रहा था। इस विवेक हीनता एवं अन्याय का दुष्परिणाम भी शीघ्र सामने आता है जब राजा अपने ही फैलाए हुए जाल में फंस कर स्वयं अपना विनाश कर लेता है। अंधेर नगरी, अंग्रेज सरकार के निकम्मेपन पर, उसकी अन्याय पूर्ण शासन नीति पर करारा तमाचा है। मजे की बात यह है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने कुशल बुद्धि से अपने इस विचार को एक ऐसे आवरण के तले डाल दिया है जिसे देखते-सुनते हुए भी अंग्रेज शासन किसी तरह की कोई कार्यवाही नहीं कर सकी। नाटक की भाषा हास्यपूर्ण है।

कथानक भी हास्य-व्यंग से परिपूर्ण ही है। नाटक का संदेश अत्यंत ही सार्थक है।

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह
समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना ।